✺ 9 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] विश्व में अशान्ति का कारण है अनेकानेक धर्म। कलियुग के अन्त में जब अनेकता है, तब अशान्ति है। बाप आकर एक सत् धर्म की स्थापना करते हैं। वहाँ शान्ति हो जाती है। तुम समझ सकते हो कि इन लक्ष्मी-नारायण के राज्य में शान्ति थी। पवित्र धर्म, पवित्र कर्म था। कल्याणकारी बाप से वह नई दुनिया बना रहा हैं।

2] विद्या ज्ञान को कहा जाता है। परमपिता परमात्मा ही ज्ञान सागर है। कृष्ण को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे।

3] विद्या है गीता का ज्ञान। वह ज्ञान तो है ही एक बाप में। जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है, जिसे मनुष्यमात्र जानते नहीं है। भारतवासियों का धर्म शास्त्र तो वास्तव में है ही एक - सर्व शास्त्रमई शिरोमणी भगवत गीता।

4] बाप कहते हैं भगवान् तो सबका एक ही है। सब आत्मायें भाई-भाई हैं। आत्माओं का बाप एक ही परमपिता परमात्मा है, उनको ही ज्ञान सागर कहेंगे। देवताओं में यह ज्ञान है नहीं। कौन-सा ज्ञान? रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान कोई मनुष्य मात्र में नहीं है।

5] वहाँ कम्पलीट पवित्रता, सुख, शान्ति, हेल्थ, वेल्थ आदि सब था। अभी पुकारते हैं हम पतित हैं, हे पतित-पावन आओ। अब प्रश्न है पतित-पावन कौन? कृष्ण को तो नहीं कहेंगे। पतित-पावन परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। वही आकर पढ़ाते है। ज्ञान तो पढ़ाई कहा जाता है। सारा मदार है गीता पर।

6] बाप ही कर्म-अकर्म-विकर्म की नॉलेज सुनाते हैं। आत्मा शरीर लेकर कर्म करने आती है। सतयुग में जो कर्म करते वह अकर्म हो जाते हैं, वहाँ विकर्म होता नहीं।

7] अकाल मूर्त आत्मा का यह रथ है। सिर्फ एक अमृतसर में नहीं, सभी मनुष्यों का अकालतख्त है। आत्मा अकाल मूर्त है। यह शरीर बोलता चलता है। अकाल आत्मा का यह चैतन्य तख्त है। अकाल मूर्त तो सभी हैं बाकी शरीर को काल खा जाता है। आत्मा तो अकाल है। तख्त तो खलास कर देते हैं। सतयुग में तख्त कोई बहुत थोड़ेही होते हैं। इस समय करोड़ों आत्माओं के तख्त हैं। अकाल आत्मा को कहा जाता है। आत्मा ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है।

8] शिवरात्रि मनाते हैं परन्तु वह कैसे आते हैं, यह जानते नहीं हैं। शिव है ही परम आत्मा। उनकी महिना बिल्कुल अगल है, आत्माओं की महिमा अलग है। बच्चों को याह पता है राधे-कृष्ण ही लक्ष्मी-नारायण हैं। लक्ष्मी-नारायण के दो रूप को ही विष्णु कहा जाता है। फर्क तो है नहीं। बाकी 4 भुजा वाला, 8 भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं है। देवियों आदि को कितनी भुजायें दे दी है। समझाने में समय लगता हैं।

8] बाप कहते हैं मैं हूँ ही गरीब निवाज़। मैं आता भी तब हूँ जब भारत गरीब बन जाता है। राहू का ग्रहण बैठ जाता है। बृहस्पति की दशा थी, अब राहू का ग्रहण भारत में तो क्या सारे वर्ल्ड पर है इसलिए बाप फिर भारत में आते हैं, आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है।

9] भगवानुवाच– मैं तुमको राजाओं का राजा, डबल सिरताज स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। पांच हजार वर्ष हुआ जबकि आदि सनात देवी-देवता धर्म था। अभी वह है नहीं। तमोप्रधान हो गये हैं। बाप खुद ही अपना अर्थात् रचयिता और रचना का परिचय देते हैं। तुम्हारे पास प्रदर्शनी, म्युज़ियम में इतने आते हैं, समझते थोड़ेही हैं। कोई बिरले समझकर कोर्स करते हैं। रचयिता और रचना को जानते हैं। रचना है बेहद का बाप। उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। यह नॉलेज बाप ही देते हैं। फिर राजाई मिल जाती है तो वहाँ नॉलेज की दरकार नहीं। सद्गति कहा जाता है नई दुनिया स्वर्ग को, दुर्गति कहा जाता है पुरानी दुनिया नर्क को।

✺ 9 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ योग-

1] – – –

✺ धारणा-

1] अगर कोई भी कर्मेन्द्रियों को विचलित करता है अर्थात् आसक्ति का भाव उत्पन्न होता है तो भी न्यारे नहीं बन सकेंगे। इच्छायें ही आसक्तियों का रूप हैं। कई कहते हैं इच्छा नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। तो यह भी सूक्ष्म आसक्ति है– इसकी महीन रूप से चेकिंग करो कि यह पदार्थ अर्थात् अल्पकाल सुख के साधन आकर्षित तो नहीं करते हैं? यह पदार्थ प्रकृति के साधन हैं, जब इनसे अनासक्त अर्थात् न्यारे बनेंगे तब प्रकृतिजीत बनेंगे।

2] मेरे-मेरे के इमेलों को छोड़ बेहद में रहो तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी

✺ सेवा-

1] तुम बच्चे जब किसको समझाते हो तो बोलो शिव भगवानुवाचन। पहले तो यह समझें कि ज्ञान सागर एक ही परमपिता परमात्मा है, जिसका नाम है शिव।

2] तुम समझा सकते हो– मनुष्यों की वृद्धि कैसे कम हो सकती है? अशान्ति कैसे कम हो सकती है? अशान्ति है ही पुरानी दुनिया कलियुग में। नई दुनिया में ही शान्ति होती है। स्वर्ग में शान्ति है ना। उनको ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है। हिन्दू धर्म तो अभी का है, इनको आदि सनातन धर्म नहीं कह सकते। यह तो हिन्दुस्तान के नाम पर हिन्दू कह देते हैं। आदि सनात देवी-देवता धर्म था।

3] बाप समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं। बच्चों को भी ऐसे समझाना है। लक्ष्मी-नारायण का चित्र दिखाना है।

4] कल्याणकारी युग में कल्याणकारी बाप आकर सबका कल्याण करते हैं। पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया स्थापन कर देते हैं। ज्ञान से सद्गति होती है। इस पर रोज़ टाइम लेकर समझा सकते हो। बोलो, रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को हम ही जानते हैं। यह गीता का एपीसोड चल रहा है जिसमें भगवान् ने आकर राजयोग सिखाया है। डबल सिरताज बनाया है। यह लक्ष्मी-नारायण भी राजयोग से यह बने हैं। इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर बाप से राजयोग सीखतें हैं।